॥ श्री ॥

समयसार कलश

SAMAYASAARA KALASHA

अमृतचन्द्राचार्य · १०वीं शती · अभिलेख ९०/९०

अमृतचन्द्राचार्य → श्री सिंहाचार्य

संक्षिप्त परिचय

आचार्य अमृतचन्द्र कृत — आत्मख्याति टीका के मध्य रचे गये संस्कृत कलश-काव्य; समयसार के अध्यात्म को छन्दोबद्ध उल्लास में गाने वाले २७८ कलश।

पं. बनारसीदास के नाटक समयसार और राजमल पाण्डेय की बालबोधिनी टीका की प्रेरणा-भूमि।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

समयसार कलश — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ९० पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता अमृतचन्द्राचार्य; रचना-काल १०वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक १६९) के अनुसार इनका समय ९०५–९५५ है। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "आत्मख्याति पुरुषार्थसिद्ध्युपाय आदि" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में चन्द्रप्रभचरित, प्रद्युम्नचरित, गद्यचिन्तामणि, क्षत्रचूड़ामणि, यशस्तिलकचम्पू, नीतिवाक्यामृत परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

चन्द्रप्रभचरित · प्रद्युम्नचरित · गद्यचिन्तामणि · क्षत्रचूड़ामणि · यशस्तिलकचम्पू · नीतिवाक्यामृत

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ९० — मूल छायाचित्र